अपराध से मुक्त करेंगे और अपराधों को राजनीति में नहीं आने देंगे। यही मुझे कहना था। धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M.A. BABY): Anyway, nobody concludes that all politicians are cirminals.

श्री संघ प्रिय गौतम : महोदय, यह जो चर्चा है इसे कल के लिए कर दीजिए। वोहरा कमेटी की रिपोर्ट पर जो चर्चा है, इसे कल के लिए कर दीजिए।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M.A. BABY): Now, we have this Half-An-Hour Discussion. At 5.30 p.m. Rajesh Pilotji Made a statement yesterday on LTTE escape from Vellore Special Camp. We will have to have clarifications from 5.30 p.m. Therefore, I do not think that the rest of the discussion on the Vohra Committee Report can be taken up today. Naturally, it can be taken up tomorrow, including the reply.

SHRI DINESHBHAI TRIVEDI: Can I make a point here if you don't mind, on this Vohra Committee Report? Hon. Shri Gujral also mentioned that the way we are treating the whole thing, I do not mean to say that it is done intentionally. But just yesterday, suddenly at about 4 o'clock the business was included saying that we will discuss the Vohra Committee Report because there is no other business before the House. Today, in the morning it was said no Vohra Committee Report, we will discusss J&K. I suddenly found at 2.30 p.m. that we were already discussing the Vohra Committee Report, I do not think that this subject requires such a, — if I may use the word, I may be pardoned, — callous treatment, without any intention,—I do not attribute any motives or intentions; but I feel that even if we are going to discuss it tomorrow, then we should know that; yes we are discussing it tomorrow. It should be very specific Sir.

THE VICE CHAIRMAN (SHRI M.A. BABY): Yes, it will be taken up tomorrow. The rest of the discussion will be held tomorrow and the Home Minister will reply also.

HALF-AN-HOUR DISCUSSION

On points Arising out of Answer to Unstarred Question 641 Given on the 16th March, 1995 Regarding Trade of Vital Human Organs

डा० मुरली मनोहर जोशी (उत्तर प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आपने मुझे इस परिचर्चा को शुरू करने का अवसर दिया। यह सवाल मैंने अतारांकित प्रश्न संख्या 641, 16.3.1995 को राज्य सभा में किया था और उसमें मैंने यह प्रश्न किया था कि क्या सरकार यह बताएगी, उस समय प्रधान मंत्री जी इस मंत्रालय का काम देख रहे थे अतः मैंने प्रश्न किया था कि क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार को गुर्दों और अन्य महत्वपूर्ण मानवीय अंगों की विदेशी प्राप्तकर्ताओं को की जाने वाली बिक्री के मामलों में हो रही वृद्धि संबंधी समाचारों की जानकारी है? यदि हां तो इस संबंध में सरकार की क्या प्रतिक्रिया है?

(ख) क्या सरकार को इस व्यापार में दलालों, डाक्टरों और दानकर्ताओं के बीच सांठ-गांठ होने के संबंध में जानकारी है? यदि हां तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

(ग) क्या यह सच है कि अंग प्रत्यारोपण संबंधी नये अधिनियम के उपबंधों के कारण यह कार्यकलाप चोरी-छिपे किये जाते हैं? यदि हां तो इस स्थिति का सामना करने के लिए क्या निवारक उपाय किये जाने का विधान है?

इसका जवाब सरकार ने दिया कि सरकार के पास ऐसी कोई सूचना नहीं है और बाकी "ब" और "स" का जवाब दिया था कि जी नहीं। इसका अर्थ यह है कि 16 मार्च तक सरकार के पास कोई जानकारी नहीं थी कि हिन्दुस्तान में गुर्दों का अनैतिक व्यापार, मानवीय अंगों का अनैतिक व्यापार हो रहा है। मैंने उस समय के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री को पत्र लिखा और उनको कहा कि देखिए आपने यह जवाब दिया है। लेकिन मेरे पास जो समाचार-पत्रों के माध्यम से सूचनाएं हैं वह यह हैं और उन समाचारों की मैंने क्लिपिंग लगाकर उनको भेज दी। इस पर उन्होंने कहा कि हमें कोई जानकारी नहीं है। श्रीमन्, यह समाचार-पत्रों में छपा हुआ है, दिल्ली के समाचार-पत्रों में छपा हुआ है। मुझे यह देखकर धक्का लगा और बहुत अचंभा हुआ कि केन्द्रीय सरकार दिल्ली में बैठकर यह कहती है कि उनको इसकी कोई जानकारी

नहीं है। इसके पश्चात् सिलवेरा साहब ने जवाब दिया कि मुझे आपकी चिट्ठी मिल गयी।

श्री विष्णुकान्त शास्त्री (उत्तर प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, मंत्री लोग आपस में बात कर रहे हैं। एक बहुत महत्वपूर्ण विषय पर बात हो रही है। अगर आपको गोष्ठी करनी है तो आप बाहर जाकर कर सकते हैं।

डा० सुरेली मनोहर जोशी: उसके बाद उन्होंने 31 मार्च को चिट्ठी का जवाब 27 अप्रैल को दिया और यह कहा कि इस बारे में आपकी चिट्ठी मुझे मिली। फिर मैंने उनको चिट्ठी लिखी कि आपने मुझे 27 अप्रैल को जवाब दिया कि आपकी चिट्ठी मुझे मिल गयी लेकिन आपने इस बारे में कोई समाधान नहीं किया। 16 मार्च से मैं आपसे पत्र-व्यवहार कर रहा हूं। उसके बाद मैंने अपने नेता को सूचित किया और चेयरमैन साहब को सूचित किया कि सरकार ने जो जवाब दिया है वह गलत है, उसको सुधारा जाए, उसको ठीक किया जाए और सही जवाब दिया जाए। लेकिन उसके बाद भी कोई जवाब नहीं आया। फिर मैंने 17 मई को चिट्ठी लिखी और उनको फिर उन समाचारों की क्लिपिंग भेजी और कहा कि निरन्तर जो सूचनाएं मिल रही हैं उनके अनुसार इस देश में गुर्दों का अनैतिक व्यापार हो रहा है, मानव अंगों का अनैतिक व्यापार हो रहा है और बहुत से लोगों को हिन्दुस्तान से बाहर ले जाया जा रहा है। तमाम हिन्दुस्तान के गरीब लोगों के गुर्दे निकाले जा रहे हैं। लेकिन इसका भी कोई जवाब नहीं आया। इसके बाद फिर अगस्त में सवाल आया और उस पर भी सरकार ने वही जवाब दिया कि इस बारे में हमारे पास कोई सूचना नहीं है। फिर मंत्रालय को लिखकर भेजा कि मुझे यह बहुत आश्चर्य की बात लगती है कि 23 मई की मेरी जो चिट्ठी है, उसका जवाब मुझे नहीं मिला। उसके बाद फिर मैंने 12 जुलाई को चिट्ठी लिखी। उसका जवाब मुझे यह दिया गया कि:

> "The undersigned is directed to refer to Rajya Sabha Secretariat's O.M. No.. . . .dated 9th May, 1995, on the subject mentioned above and to say that in view of the factual position explained vide this Ministry's O.M. of even number dated 4th May, 1995, and the fact that no statistics or authentic information whether the trade of kidneys and other vital humanorgans to recipients abroad has been increasing or decreasing and that the trade in such matters is a clandestine one, the reply given to the above mentioned Rajya Sabha Unstarred Question No. 641 answered on 16th March, 1995 was correct and the Minister of State for health & Family Welfare does not desire to correct it.
>
> This issues with the approval of Minister of State for Health & Family Welfare."

यह मुझे राज्यसभा की ओर से 12 जुलाई को चिट्ठी मिली है जिसमें फिर से आपके मंत्रालय ने इस बात की पुष्टि की कि उनके पास कोई जानकारी नहीं है। यह तो बहुत ही विचित्र बात है मैं आपको बताना चाहता हूं कि इस देश में क्या हो रहा है, क्या परिस्थिति है। जनवरी 1995 में खबर छपी थी, नयी दिल्ली से प्रकाशित होने वाले हिन्दुस्तान टाइम्स में, जिसमें यह कहा गया कि:

> "The doctor who works for a leading non-governmental organisations here said, after hard interrogation, the suspects confessed to have allowed themselves to be taken to a Latin American country for removal of their kidneys in return for hard cash. According to the doctor, the donors told him that their kindneys were actually destined for organ-failure victims in the United States and hundreds of others had gone on the 'kidney tour' before them."

हजारों लोग हैं जो हिन्दुस्तान से बाहर ले जाए गए हैं, जिनकी किडनी निकाली गयी है। ये लैटिन अमेरिका से युनाइटेड स्टेट्स आफ अमेरिका भेजी गई हैं क्योंकि अमेरिका में इस बारे में बहुत सख्त कानून हैं और वहां कोई जिंदा आदमी अपने अंगों का व्यापार नहीं कर सकता, वह अपने किसी अंग को नहीं बेच सकता। उसके बाद आगे चलकर कहते हैं कि:

> "Doctors would receive hefty dollar payments in accounts maintained abroad from a foreign client while the donor gets a paltry five or ten thousand rupees for risking his life and losing a valuable organ."

यह जनवरी 1995 में है और मार्च 1995 में आपका जवाब मिलता है कि आपको कोई जानकारी नहीं है। उसके बाद 31 जनवरी, 1995 का इंडियन एक्सप्रेस कहता है कि:

> "Velu, who worked as a coolie in the City Market here for some years, told 'Indian Express' that Yusuf, an agent from Bangalore, who frequented his village, had approached him promising a job in the city."

> "He was taken to a room in Sultanpalya in Bangalore where he was kept for a week. It was then suggested to him that he donate blood to meet his daily expenses until he got a job."

वह ले जाया गया इसलिए कि उससे खून डोनेट कराया जाए लेकिन उसका गुर्दा उतार लिया गया। मैं उस लम्बी तफसील में नहीं जाना चाहता हूं। इण्डियन एक्सप्रेस में पूरा ब्यौरा छपा हुआ है कि किस तरह से लोगों को धोखा दे कर खास तौर से खून डोनेट करने के बहाने उनके गुर्दे निकाल लिये जाते हैं। फिर आप आगे चलेंगे तो आपके बंगलौर के जो होम मिनिस्टर है पी०जी०आर० सिंदिया उन्होंने चार फरवरी को बयान दिया—

> "Mr. Sindhia said the City Police had been receiving complaints from persons deprived of kidneys for quite some time now. An investigation squad had been formed which found that the illegal business was going on since latter part of 1990 in some reputed hospitals in Bangalore."

1990 से तो कम से यह व्यापार चल रहा है। आपकी सरकार को मालूम है, आपकी राज्य सरकारों को मालूम है। अखबारों में खबरें छप रही हैं। आपका मंत्रालय कहता है कि सरकार के पास कोई जानकारी नहीं है, सरकार के पास कोई स्टेटेस्टिक्स नहीं है, उसे यह पता नहीं है कि यह व्यापार हो रहा है अनैतिक ढंग से यह हो रहा है। तमाम खबरें छप रही हैं। मुझे बहुत आश्चर्य होता है कि स्वास्थ्य मंत्रालय क्या काम करता है। उसके बाद फिर पांच मार्च, 1995 को यह "टेलीग्राफ" कलकत्ता में खबर छपी है।

> "The agents reportedly got Rs. 1,000 to Rs. 3,000 per donor who, in turn, was paid around Rs. 10,000 to Rs. 40,000. The uproar is over the clinics having milked several lakhs of rupees from foreign clients.
>
> The Bombay police, not to be outdone, raided Kaushalya clinic at Khar last week leading to the arrest of Dr. Santosh Raut and Dr. Abhay Dalwi. Later, a neurologist, Dr. Ashiq Ahmad Rawal, was arrested for 'robbing' a kidney from a patient. Abdul Hasan, a recepient from Yemen reportedly paid 10,000 dollars for the operation at Kaushalya clinic,..."

तीन लाख रुपये वहां से लिये जाएं और उसके बाद इस आदमी को 20 हजार, 25 हजार, 10 हजार दे दिये जाएं। यह क्या हो रहा है? इस देश के अन्दर लोगों को आप गुर्दा बेचने पर मजबूर कर रहे हैं। क्यों कर रहे हैं इसका मैं जवाब दूंगा। कि वह कहते हैं—

> "Patients from Germany, Japan and the Gulf are said to be the chief beneficiaries. They prefer India (China being the second donor country) since the cost of transplant is a fraction of what it is in their own countries."

ऐसी तमाम खबरें मैं पहले आपके विभाग को, आपके मंत्रालय को भेज चुका हूं। यदि आप चाहें तो यह समाचार मैं आपको दे सकता हूं। सवाल यह है, हालत यह है कि इस तरह की तमाम चीज़ें हो रही हैं और आपका मंत्रालय चुप बैठा हुआ है तो इससे कई सवालात पैदा होते हैं। एक सवाल तो यह पैदा होता है कि इस देश में लोग क्यों गुर्दा बेचने के लिए मजबूर किये जा रहे हैं। यह तमाम लोग किस इलाके के लोग हैं, कहां से यह लोग आते हैं और सरकार का इन मामलों में क्या एटीट्यूड है। आज तमिलनाडु में, केरल में और आन्ध्र प्रदेश में ऐसे गांव के गांव हैं जिनमें एक भी आदमी ऐसा नहीं है जिसका गुर्दा साबुत बचा हो। कहां गये गुर्दे? यहां अभी दिल्ली में एक केस हुआ है। वह तो और भी हैरतअंगेज है जिसके बारे में मैं आपको बताऊं तो आपको पता लग जाएगा कि आपकी सरकार क्या कर रही है। यह नई दिल्ली का किस्सा है और यह पहली अगस्त को हुआ है।

"A Tis Hazari metropolitan magistrate has directed the DCP (Crime) to conduct an enquiry into the circumstances in which a walled city resident was forced to sell one of his kidneys to a Bombay hospital.

The man, Ashiq Ali, was arrested on July 27 by Jama Masjid police under the Arms Act. he was produced in Mr. Vinod Sharma's court at Tis Hazari the next day with a plea to remand him in judicial custody.

During the hearing in Mr. Sharma's court, Ali came up with a startling disclosure. Pleading that he be freed on baid on medical ground, he told the court that owing to his poor financial condition, he had sold one of his kidneys in 1993 to a Bombay-based private hospital for a paltry sum of Rs. 30,000/-. 'I was coerced by some brokers into selling off my kidney', he said, adding: 'I had no other means to survive and my poverty was exploited for petty gains by the immoral and inhuman doctors who had been running the racket for many years."

यह अहम सवाल इसमें से पैदा होता है कि यह लोग अपनी गुरबत की वजह से, निर्धनता की वजह से अपने आर्थिक अस्तित्व को बचाए रखने के लिए, जीवन को बचाए रखने के लिए अपनी गुर्दों और अंगों को बेचने के लिए मजबूर हो रहे हैं। वित्त मंत्री जी यहां नहीं हैं वह तो रोज़ अपने पांच वर्ष के रिफार्म्स आर्थिक नीति की किस तरह से दुहाई देते रहे हैं। कि हम जो कुछ कर रहे हैं वह गरीबों तक पहुंच रहा है। प्रधान मंत्री रोज लाल किले से चिल्लाते हैं कि हिंदुस्तान के अंदर जो कुछ हम आर्थिक नीतियां ला रहे हैं वे गरीबों के फायदे के लिए आ रही हैं। आपके कामर्स मिनिस्टर और इंडस्ट्री मिनिस्टर रोज यही कहते हैं। आपकी सारी पार्टी रोज यही कहती है। लेकिन यह हो रहा है कि आपकी आर्थिक नीतियों का नतीजा जो हिंदुस्तान के गांव के लोगों को अपना जीवन और अपना अस्तित्व बचाने के लिए अपने गुर्दे बेचने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। आपने हिंदुस्तान को न केवल मल्टी नेशनल्स के कंज्यूमर गुड्स का बाजार बनाया है बल्कि आपने हिंदुस्तान को एक मीट शाप बना दिया है जिसमें लोग अपने गुर्दे बेच रहे हैं। यह गुर्दों का बाजार आपने बना दिया है। आप गुर्दा फरोशी का काम कर रहे हैं इस देश के अंदर गुर्दा तराशी का काम कर रहे हैं इस देश के अंदर। ये हालात आज आपने पैदा कर दिए हैं...(**व्यवधान**)

आज तामिलनाडु में, केरल में आन्ध्र में ऐसे तमाम गांव हैं जिनमें एक भी ऐसा आदमी नहीं है जिसका गुर्दा साबित बचा हो। पहले मैं यह समझता था कि शायद यह समस्या उन दक्षिण राज्यों की गरीबी के अंदर ही है लेकिन अभी पिछले दिनों इलाहाबाद में एक घटना हो गयी, दिल्ली में एक घटना हो गयी। आज सारे हिंदुस्तान के अंदर ये घटनाएं हो रही हैं। आप जरा मालूम करें कि वे कौन लोग हैं। कहीं पर आशिक अली है, कोई युसूफ है। ये कौन लोग हैं। ये वही हैं जिन जिन लोगों को आप रोज कहते रहते हैं कि हम तमाम इस हिंदुस्तान के लोगों को, नागरिकों को अल्पसंख्यकों को बचा रहे हैं। आप नाम देखें। मैं सरकार से बार बार कहना चाहता हूं कि आप बताएं जरा इन गांववासियों के नाम। क्या हैं? वे कौन लोग हैं? तो आपको पता लगेगा कि आप अल्पसंख्यकों के गुर्दे बहुत ज्यादा मात्रा में बिकवा रहे हैं। यह आप हत्यारी सरकार के तौर पर काम कर रहे हैं। मैं आप पर आरोप लगाता हूं कि आपने इस मुल्क के अंदर लापरवाही जानबूझकर बरती है और आप विदेशों के अंदर हिंदुस्तान के इन अंगों को सस्ता बेच रहे हैं। आप यहां से 45 हजार महिलाओं को बाहर भेजना चाहते हैं सिंगापुर और मलेशिया में, जो यहां से जाकर नौकरी करेंगी। मुझे पता नहीं उनमें से कितनों के गुर्दे और जिगर साबित बचकर आएंगे। कौन से अंग उनके बचेंगे और कौन से नहीं बचेंगे?

यह बहुत अहम सवाल खड़ा हो गया है इसमें से कि आज पूरे गांव के गांव खरीदे जा सकते है, बस्तियां खरीदी जा सकती हैं। मल्टी नेशनल्स लोगों को ब्रोकर बनाकर कंट्रेक्ट कर सकते हैं कि हमें 10 हजार आंखे चाहिए और आपको ठेका दे दिया है। हमको 20 हजार हार्ट्स चाहिए, दिल चाहिएं। ऐसे किस्से आ रहे हैं जिनमें छोटे बच्चों को अस्पताल ले जाया जा रहा है और उनके अंग निकाले जा रहे हैं और वे बेचे जा रहे हैं। शर्म आनी चाहिए इस सरकार को, इस एडमिनिस्ट्रेशन को जो अपने देश के गरीबों और अपने देश के नौनिहालों के अंगों को बेचकर उनको जीवित रहने के लिए मजबूर कर रहा है। यह कैसी सरकार है? यह क्या इंतजाम है? क्या प्रबंध है? इस देश को शर्म आनी चाहिए। यहां बच्चों के

छिपाना चाहते हैं। मुझे शक होता है कभी-कभी कि शायद वे लोग भी इस जघन्य अपराध में शामिल हो जहां लाखों रुपये के और करोड़ों रुपये के लेन-देन हुए हैं। इन्हीं पत्रों में लिखा हुआ है कि विदेशी एकाउंट्स में उन डाक्टरों के पैसे जमा होते हैं जो गुर्दे का व्यापार यहां करते हैं। पैसे यहां कम दिए जाते हैं और बहुत अधिक पैसे उन विदेशी बैंकों में जमा किए जाते हैं। क्या आप इन तमाम डाक्टरों के विदेशी खातों की जांच-पड़ताल करेंगे? क्या आप इस बारे में इस देश को आश्वस्त करेंगे कि इस देश की गरीबी का, मज़बूरी का, विवशता का नाजायज़ फायदा इस देश का कोई चिकित्सा अधिकारी, कोई दलाल, कोई इस प्रकार का विदेशी नागरिक नहीं उठाने पायेगा? ये सवाल हैं जो इसमें से उभर करके आते हैं।

फिर मैं आपसे यह भी कहूंगा कि क्या आप कुछ ऐसा इंतजाम करेंगे कि अगर किसी भाई को, किसी बहन को गुर्दा ट्रांसप्लांट हुआ है, प्रत्यारोपित हुआ है तो इस बारे में सूचना डाक्टर बराबर किसी एजेंसी को देगा कि इस मनुष्य का, इस व्यक्ति का, इस मरीज का फलाना अंग, अमुक अंग प्रत्यारोपित है, इसका जिगर प्रत्यारोपित है, इसका हृदय प्रत्यारोपित है, इसमें हमने यह आंखों का रेटिनल ग्राफ्टिंग किया है? ये तमाम चीज़े क्या आप कोई एक ऐसी एजेंसी बनायेंगे कि जिसके पास देश भर की सूचना रहे कि जो तमाम बातें जाहिर कर सके अगर मालूम करना हो कि अमुक व्यक्ति को जो गुर्दा लगा था वह कहां से आया था, किसका था और यह डाक्टर के ऊपर मेंडेटरी हो, यह उसके ऊपर कानूनी बाध्यता हो कि वह उस सारी सूचना को उस एजेंसी को या उस अधिकरण को देगा जो कि सरकार इस मामले में बनायेगी?

महोदय, यह प्रश्न बहुत गंभीर है और मैं ऐसा समझता हूं कि सारे सदन को, देश को और देश की सरकार को इस पर चिंता करनी चाहिए। यह प्रश्न देश की आर्थिक स्थिति से जुड़ा है। यह देश की चिकित्सा प्रणाली से जुड़ा है। मानव कल्याण से जुड़ा हुआ है। सब से बड़ी बात तो यह है कि यह देश के स्वाभिमान से जुड़ा है। क्या हिन्दुस्तान आज दुनिया में इस काबिल गिना जाएगा कि यहां के लोग अपनी भूख मिटाने के लिए, अपने जीवन को सन्तुष्ट रखने के लिए, अपने बच्चों की परवरिश के लिए आज अपने अंग बेचने को मज़बूर हो गए हैं? कोई भी सरकार जो इन आंकड़ों को छिपाती है वह सच पूछिए तो देश की दयनीय हालत को देश से छिपाना चाहती है। मुझे कभी-कभी लगता है कि शायद इसके लिए आप खुद जिम्मेदार हैं, क्योंकि सरकार की नीतियां इस बात के लिए जिम्मेदार हैं। इसलिए सरकार शर्म से इन आंकड़ों को छिपाना चाहती है। दिस इज़ ए शेम ऑन दिस गवर्नमेंट कि इस तरह की हरकत इस देश में हो रही है और सरकार ने आज तक इस पर कोई कदम नहीं उठाया। सरकार इस मामले में देश को गुमराह कर रही है। मैं चाहूंगा कि सारे तथ्य सदन के सामने रखे जाएं और इन सवालों का ठीक-ठाक जवाब दिया जाए। इस अमानवीय व्यापार को रोकने के लिए कड़े से कड़े कदम उठाए जाएं और इस सब की आश्वस्ति सदन को दी जाए। मैं चाहूंगा कि सरकार सदन और देश को आश्वस्त करे कि हिंदुस्तान में कोई आदमी भूख मिटाने के लिए अपने गुर्दे और अपना जिस्म देने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा। महोदय, अगर देश को इस हालात में ले जा सकें तो देश का कल्याण होगा वरना मैं आप से कहूंगा कि कृपा कर के स्थान खाली करें और उन लोगों को आने दें जोकि देश के लोगों की रक्षा कर सकें, उन के शरीर की रक्षा कर सकें, उनके अंगों की रक्षा कर सकें।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (उत्तर प्रदेश): ऐसे कौन लोग हो सकते हैं?

डा० मुरली मनोहर जोशी: ऐसे बहुत लोग हो सकते हैं।

चिमनभाई मेहता (गुजरात): हैं ऐसे लोग देश में?

डा० मुरली मनोहर जोशी: ये तो नहीं है और चाहे जो कोई भी हो।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय: अंतुले साहब, इन के लिए कुर्सी खाली नहीं कीजिएगा।

डा० मुरली मनोहर जोशी: आप किसी के लिए खाली मत कीजिएगा मगर उनके लिए खाली कीजिएगा जो इस काम को कर सके। अगर मैं कर सकूं तो मेरे लिए खाली कीजिए, आप कर सकें तो आप के लिए खाली कीजिए। उपाध्यक्ष महोदय, अभी तक तो मैं समझता था कि राजेश पायलट जी का "नेक्सस" मुलायम सिंह जी से है, आज सत्य प्रकाश जी से भी हो रहा है। यह बहुत खुशी की बात है। धन्यवाद।

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री राजेश पायलट): आप से भी है।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M.A. BABY): Joshi Ji has raised the discussion. The practice is that the hon. Minister will reply. Afterwards, if some

अंग, लोगों के अंग बचाए जाने चाहिए। अमेरिका और योरोप में कानून है कि कोई जिंदा आदमी अपने अंगों को नहीं बेच सकता है। वह खरीदा नहीं जा सकता है। वहां रोकथाम है तो क्या इसलिए आप यहां से अपने अंगों को बाहर सस्ते दामों में भेज रहे हैं और उन लोगों को खरीदने के लिए स्थितियां पैदा कर रहे हैं।

मैं इसलिए कह रहा हूं कि यह बहुत अहम सवाल है। छोटा सवाल नहीं है और इस बारे में सरकार का जो एटीटयूड है वह इतना खराब है, इतना लज्जाजनक है कि मुझे शर्म आती है कहते हुए। यह सरकार कोई काबिल सरकार नहीं है जो अपने मानव अंगों के साथ इस प्रकार की व्यवस्था कर रही है। फिर मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि सरकार अभी तक इस तरह की जानकारी इकट्ठा करने में क्यों असफल रही है? क्या सरकार हमें बताएगी, इस सदन को मंत्री महोदय बताएंगे कि ऐसे कौन कौन से गांव हैं जिनका मैंने उल्लेख किया, उनके अलावा जो अखबारों में छपे हैं, जहां कितने लोग ऐसे हैं जिनके गुर्दे और बाकी मानव अंग बेचे जा चुके हैं। सरकार इसकी रोकथाम करने के लिए क्या करेगी? उनसे कारण पूछेगी कि नहीं पूछेगी कि वे क्यों ऐसा करने पर मजबूर हुए। उनकी गरीबी को दूर करने के लिए सरकार क्या उपाय करेगी? वे सवाल इसमें से निकले हैं।

इसलिए मैं चाहूंगा कि आप इसका सर्वेक्षण कराएं और संजीदा सर्वेक्षण कराएं। इस सर्वेक्षण में न केवल इस बात की जानकारी हो कि तुमने कहां और किसको गुर्दा बेचा बल्कि यह बात भी पूछी जाए कि गुर्दा क्यों बेचा, तुम यह गुर्दा बेचने पर क्यों मजबूर हुए। तुम्हारी ऐसे हालत क्यों हुई। यह अगर आप कराएंगे तो इससे आपको देश की असली हालत का पता लगेगा, उस तस्वीर का पता लगेगा जो तस्वीर आज हिंदुस्तान की पिछले पांच सालों में आपने बनायी है।

मैं फिर यह कहना चाहूंगा कि आपके मानव अंगों के प्रत्यारोपण के विरोध में जो कानून बना है, उस कानून के बन जाने के बाद जो लोग ऐसा कर रहे हैं उन पर आप क्या कार्यवाही कर रहे हैं। उनको आप किस तरह से सजा देंगे? यह तो बिल्कुल एक नृशंस कृत्य है, अमानवीय कृत्य है, ऐसा कृत्य है जिसके लिए बिल्कुल वैसा ही दण्ड दिया जाना चाहिए जैसा किसी और जघन्य अपराधी को देते हैं। क्या आप इसके बारे में इस देश की दण्ड व्यवस्था में भी कोई व्यवस्था करेंगे।

यह मैं आपसे सवाल जानना चाहता हूं। फिर मैं यह भी जानना चाहूंगा कि वह जो मैडिकल पर्सोनेल है, जो चिकित्सा अधिकारी हैं, जो यह काम कर रहे हैं, उनमें से आपने एक डाक्टर को बंद कर दिया, दो अस्पतालों को देख लिया, इतने से काम नहीं चलेगा। लेकिन एक भारी संख्या में रैकेट है। हजारों की संख्या में रैकेट है। यह एक शहर में नहीं, हर शहर में इस तरह का काम हो रहा है, व्यापार हो रहा है, मानव अंगों का व्यापार हो रहा है। तो इन व्यापार करने वालों का आप इन चिकित्सकों का क्या करेंगे, उन दलालों का क्या करेंगे, जो इस तरह से मानव की मज़बूरी का नाजायज़ फायदा उठा रहे हैं और मानवता के साथ इस प्रकार का क्रूर नृशंस अत्याचार कर रहे हैं? उनके लिए आप क्या करेंगे? क्या आप उनके नाम छापेंगे? मैं यह जानना चाहूंगा कि क्या आप इस तरह के तमाम उन डाक्टरों का और उन अस्पतालों का जहां इस तरह के काम होते हैं उनकी पूरी सूची सारे देश को बता देंगे जिससे यह पता लग सके कि इन अस्पतालों में अगर आप जायेंगे और खून देने के बहाने अगर आप ले जाये जायेंगे तो वहां आपका गुर्दा निकाल लिया जाएगा? आप इसको सूचित करें, इसको बताएं। मैं इसमें यह भी जानना चाहूंगा कि क्या आप अपने कानून का फिर से निरीक्षण करेंगे? आपने उसके अनुसार क्या रुल्ज बनाए हैं? अगर यह कानून नाकाफी है तो आप इस कानून को और अधिक सख्त बनाने के लिए और अधिक व्यवहारिक बनाने के लिए जिससे यह अनैतिक कार्य न हो सके। नृशंस कार्य न हो सके, क्या आप अपने इस कानून ह्यूमैन आर्गेन्स ट्रांसप्लांट एक्ट, 1995 पर फिर से गौर करेंगे, इसमें सुधार करेंगे और इसको और मज़बूत करेंगे, इसमें आप संशोधन लायेंगे? फिर मैं यह जानना चाहता हूं कि सरकार इन बातों को क्यों छिपाना चाहती है? मुझे अफसोस इस बात पर हुआ कि इतनी जानकारी होने के बाद, प्रैस क्लिपिंग्स देखने के बाद आपका मंत्रालय इतना निर्मम है, केलस है, इतना इर-रेसपांसिव है, संवेदनशून्य है कि उसे मानव जीवन की कोई परवाह ही नहीं है। यह कैसे अधिकारी आपके मंत्रालय में बैठे हैं जिन्हें इस बारे में कुछ भी चिंता नहीं है और वस्तुस्थिति को सदन से छिपाना चाहते हैं, देश से छिपाना चाहते हैं? आखिर क्या वजह है कि जो सरकार इन आंकड़ों को देने में अपनी मज़बूरी जाहिर करती रही है? क्या सरकार के पास ऐसी व्यवस्थाएं नहीं है? अगर ऐसे आपके कुछ अधिकारी है जो कि वस्तुस्थिति को छिपा रहे हैं, क्या आप उनको दंडित करेंगे? मैं समझता हूं कि ऐसे अधिकारी चिकित्सा विभाग में और आपके स्वास्थ्य विभाग में अधिकारी रहने के काबिल नहीं हैं कि जो मानव की इस प्रकार की दर्दनाक हालत को सदन से छिपाना चाहते हैं, मंत्रालय से छिपाना चाहते हैं, देश से

Members want to put some very brief questions, a little more time will be given. Two names are there.

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu): Sir, since it is going to be 5.30, will you be taking up clarifications now and then the Minister will reply or are you going to break the hon. Minister's speech at 5.30?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M.A. BABY): No. We will finish it within ten to fifteen minutes. I hope it would not take much of the time. Then immediately we will take up the clarifications.

SHRIMAIT JAYANTI NATARAJAN): Generally we speak as long as we want, if it does not get too late.

मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी: (उत्तर प्रदेश) महोदय, मसला गुर्दे का है और सिर्फ दो आदमी और बोलनेवाले हैं दो-दो मिनिट बुलवा दीजिए।

†[مولانا عبیداللہ خان اعظمی:
مہودے - مسئلہ گردے کا ہے اور صرف دو
آدمی اور بولنے والے ہیں - دو دو منٹ بلوا
دیجئے]†

SHRI G. SWAMINATHAN (Tamil Nadu): Sir, it is a very important discussion. We would request let other members speak first and then let the Minister reply.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M.A. BABY): No. Now, the Minister will reply. If you are not satisfied then only you can ask questions.

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री (श्री ए० आर० अंतुले): उपाध्यक्ष महोदय डा० जोशी साहब बहुत अच्छी तकरीर करते हैं, उनकी विचारधारा भी काफी तेज है और वह इंटलैक्चुअल भी है। उन्होंने अपने बयान में जो हकाइक के बारे में कहा, सत्य के बारे में कहा, वह हम कभी छिपाना नहीं चाहेंगे। मैं ने बिल्कुल पहले ही दिन इस मंत्रालय में आने के बाद सारे अधिकारियों की मीटिंग में यह कहा था, मैं उसे इस सम्माननीय सदन में दोहराना चाहता हूं, कि इस मंत्रालय की यह विशेषता रहेगी कि इसमें ट्रांसपेरेंसी रहेगी क्योंकि यह डिफेंस का डिपार्टमेंट नहीं है और न होम डिपार्टमेंट है। डिफेंस में बहुत सारे सीक्रेट्स रहते हैं जोकि देश के इंटरेस्ट में नहीं बताए जा सकते और शायद वह पूछे भी नहीं जा सकते। होम डिपार्टमेंट के अंदर भी कुछ सीक्रेट्स हो सकते हैं, लेकिन स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अंदर ऐसी कोई चीज नहीं है जोकि सम्मानीय सदन से या देशवासियों से छिपाई जा सके और न हम छिपाना चाहते हैं। उपाध्यक्ष महोदय, मैं पिछले 10 हफ्ते से जाती तौर पर इस विभाग में अपने दोस्तों के साथ काम कर रहा हूं, तकरीबन हर दूसरे-तीसरे रोज मीटिंग कर के हम यह कोशिश कर रहे हैं कि हर चीज के अंदर ज्यादा-से-ज्यादा ट्रांसपेरेंसी किस तरह से आए। जोशी जी ने जो मामला उठाया है, बहुत गंभीर है। उसको गंभीर न कहना सूरज की रोशनी से इंकार करना है और वह मैं जसारत नहीं कर सकता, न जुर्रत कर सकता हूं। उनके बयान और तकरीर से सियासी हिस्सा, पोलिटिकल भाग अगर अलग किया जाए तो उन्होंने जो कहा है, वह मैं समझता हूं कि न सिर्फ गौर करने के काबिल है बल्कि अमल में भी लाने के काबिल है। चूंकि मैंने पहले ही कहा कि हमें कोई चीज छुपानी नहीं, छुपाना गलत है। तो सरकार की नीति इसके लिए जिम्मेदार नहीं है, यह बात सही है, हालांकि जोशी जी नहीं मानेंगे। यह अगर गुरबत की वजह से हो रहा है तो यह गुरबत बहुत पहले से है, यह गुरबत गत पांच, दस साल में या पंद्रह साल में नहीं हुई। यह ट्रांसप्लांटेशन का सिलसिला बहुत उसके पहले से चल रहा है, आर्गन के ट्रांसप्लांटेशन का या इस देश में किडनी या और किसी अंग के बेचने का सिलसिला यह एक वर्ष से शुरू नहीं हुआ। गुरबत से इसका ताल्लुक है, यह सही है, लेकिन चूंकि गरीब देश है इसलिए गुरबत की वजह से आदमी को यह बेचना पड़ रहा है, यह कहना, मैं समझता हूं थोड़ा दिमाग में या उसके ऊपर यकीन करना मेरे जैसे आदमी के लिए, जो बिल्कुल साफ जेहन और साफ नजर है, मुश्किल लगता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इस तरह का अगर व्यापार हो रहा है, सौदा हो रहा है तो उसके ऊपर चादर रखकर उसको बंद कर दिया जाए और खुला न किया जाए।

उपसभाध्यक्ष महोदय, आपने बहुत से पत्रों में, न्यूज-पेपर में आई हुई चीजों का जिक्र किया। मैं यह नहीं कहता कि वर्तमान पत्रों में, न्यूज पैपर में या अखबारों में आई हुई चीजें गलत होती हैं, लेकिन यह भी मैं नहीं कह सकता कि अखबारों में आई हुई हर

†[ ]Transliteration in Arabic Script

चीज सही हो सकती है, लेकिन यह बात भी सही है कि अखबार में कोई चीज छपने के बाद उसके बारे में तह तक जाने की कोशिश शासन को करनी चाहिए, मंत्रालय को करनी चाहिए। मुझे अफसोस है कि यह चीज अगर नहीं हुई है तो मैं इस बारे में कोई मदाखलत नहीं करना चाहता, कोई डिफेंड देना नहीं चाहता। मैं उनमें से नहीं हूं, जो कहे कि शासन ने जो किया है वह हर चीज सही है और सामने बैठे हुए हमारे दोस्त, भाई बहन जो कहते हैं वह सारी चीज गलत है। सही इधर से भी हो सकता है, उधर से भी हो सकता है। गलती इधर से भी हो सकती है, उधर से भी हो सकती है। आखिर इस समाज के ही हम प्रतिनिधि हैं, जिसको हम हिंदवी या हिंद समाज कहते हैं। इस समाज के अंदर जितनी अच्छाइयां या बुराईयां हैं, उसी रेशों के अंदर अच्छाइयां या बुराइयां हम में आ सकती हैं, चाहे हम इस जगह पर हों या उस जगह पर हों। हम भी उस जगह पर बैठे हुए हैं और वह भी इस जगह पर बैठे हुए हैं। उन्हें याद होगा कि जब वह उस पार्टी के महासचिव थे तब मैं इस पार्टी का महासचिव था। यह सन 1977 की बात है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, में इसके लिए कोई लंबी और तवील दलील पेश नहीं करूंगा। मैं एकदम से यह कहूंगा कि मैं खुद जोशी जी के साथ बैठकर, यह जो चीज गलत है और जिसकी रोकना चाहिए, इसकी रोकथाम के लिए जो आप सुझाव देंगे, वह मेरा मंत्रालय, मैं और मेरे जो साथी हैं, हम सब मानने के लिए तैयार हैं।

[उपसभाध्यक्ष (श्री वी० नारायणसामी) पीठासीन हुए]

हम बिल्कुल इसके लिए ऐसा नहीं करेंगे कि चूंकि सुझाव उधर से आ रहा है, इसलिए हम अपनी प्रिस्टेज, सो काल प्रिस्टेज के पर खड़े रहकर कहें कि हम इस चीज को पसंद नहीं करेंगे या नहीं मानेंगे। उसका नाम न डेमोक्रेसी हो सकता है, न लोकतंत्र हो सकता है। इसलिए इतना कहने के बाद मैं यह जरूर कहना चाहूंगा कि चूंकि यह स्टेट सब्जेक्ट है, इस पर्दे के पीछे मैं जाना नहीं चाहता, न मैं छिपना चाहता हूं और न मेरे मंत्रालय को छिपाना चाहता हूं, लेकिन क्योंकि यह स्टेट सब्जेक्ट है इसलिए मैं यह जरूर तवक्को रखूंगा और कहना चाहूंगा डा० मुरली मनोहर जोशी साहब को कि अभी तक कुछ राज्यों ने इस कानून को लागू नहीं किया है, जिसमें हमारा एक राजस्थान है, जिसके चीफ मिनिस्टर मेरे बहुत अच्छे मित्र हैं। इसी तरह से एक स्टेट गुजरात है, वहां के जो चीफ मिनिस्टर हैं, वे भी मेरे गहरे दोस्त हैं और उनसे मेरे जाती ताल्लुकात हैं, उन्होंने भी लागू नहीं किया है। तो इसका मतलब यह नहीं है कि चूंकि हमारे डा० साहब की पार्टी की कुछ स्टेट गवर्नमेंट्स ने इसको मंजूर नहीं किया है अभी तक और अमल में नहीं लाया है इसलिए उसके भी पर्दे के पीछे जाकर, अगर हमारे मंत्रालय में कुछ गलतियां हुई हैं, खामियां हुई हैं, कुसूर हुआ है, बेपरवाही हुई है या गफलत हुई है, तो उसके लिए मैं कोई दलील पेश करूंगा। इसीलिए मैं कहूंगा कि अगर जरूरत पेश आए और उसके लिए अगर हाउस की कमेटी भी बनानी पड़े, अब इससे आगे तो मैं नहीं बढ़ सकता और न मैं समझता हूं कि कोई यह कहेगा कि कोई इससे आगे बढ़े, तो उसको भी संगठित करके, बनाकर, अध्यक्ष महोदय आपकी अनुमति से, हम इस चीज़ की तह तक जाना चाहते हैं क्योंकि यह एक गंभीर मसला है और इस मसले को हम कभी पसो-पेश में डालना नहीं चाहते और न चाहेंगे बल्कि आपका हमें उसके लिए सहयोग चाहिए ताकि हम भी अपना काम ठीक तरीके से कर सकें और यह जो बहुत ही गलत बल्कि जैसा सही आपने कहा, शर्मनाक चीज है कि किसी भी शख्स को अपने ऑर्गन को बेचना पड़े किसी भी वजह से, गुरबत की वजह से कुछ चीजें हुई हैं यह बात सही है और कुछ बड़े-बड़े डाक्टर भी इसमें शामिल हैं, यह भी बात ठीक है। तो उनको अगर सख्त से सख्त सज़ा देने की जरूरत भी पेश हो, जो कानून के अंदर है, तो उसके अंदर यूनिफार्मिटी लाने के लिए सारे स्टेट के अंदर चूंकि यह स्टेट सब्जेक्ट है, डा० साहब, हम और वे चाहेंगे और हम चाहेंगे कि 5, 10, 15 लोग माननीय सदस्य और बाहर के भी अगर बैठे और एक कमेटी का गठन करने से अगर इस मसले को हम हल कर सकते हैं, उसकी तह तक जा सकते हैं तो हम जाएंगे।

रहा सवाल अभी तक जो चीजें आई, उसके बारे में क्यों नहीं एक्शन लिया गया? मुझे इसका नोटिस जब मिला तब पता चला, लेकिन मैं मंत्रालय की तरफ से सफाई पेश करना नहीं चाहता और न चाहूंगा। मैंने आज तक कभी भी, जिस भी हैसियत से काम किया हो, कभी भी गलत सफाई पेश करने की कोशिश नहीं की। इसलिए, अध्यक्ष महोदय, मैं यह अनुरोध करूंगा कि हम आपस में बैठकर इस एक बीमारी को जो हमारे समाज को लगी है, बदकिस्मती से कुछ लोगों की वजह से जो घटनाएं हुई हैं, जो पाप हुए हैं, उसको दूर करने के लिए जो भी कदम उठाए जाएं, उस कदम में इस शासन को आप पीछे नहीं पाएंगे बल्कि आपके साथ कदम-ब-कदम, शाना-ब-शाना, हाथ में हाथ डालकर

चलते हुए आप देखेंगे। इस वक्त मैं इतना ही कहना चाहता हूं इसलिए कि दलील की दलील देकर कोई प्वाइंट या स्कोर सैटल करने वाली बात इस जगह पर मैं कहना नहीं चाहूंगा और न ही कहूंगा और न यह मेरी फितरत है, न यह मेरा नेचर है। इसलिए इस चीज के बारे में मैं यही कहूंगा, अध्यक्ष महोदय, कि हमारे मुरली मनोहर जोशी साहब और हम बैठकर इस सिलसिले में जिन हज़रात् से, जिन महोदय से, जिन स्वातीन से, जो हमारी बहनें हैं, उनसे जो हमें मदद मिल सकती है, उनसे मदद लेकर अगर हम इस बीमारी को हिन्दुस्तान से बाहर कर सकें तो यह एक बहुत बड़ी चीज़ होगी और मैं समझता हूं कि डा० मुरली मनोहर जोशी साहब ने इस चीज को आज इस जगह पर शुरू करके, एक बहुत बड़ा कदम उठाकर शासन की भी सहायता की, समाज की भी सहायता की और मैं समझता हूं कि बहुत ही गलत चीज जो हो रही है, शर्मनाक चीज हो रही है, गलत ही नहीं, उसकी रोकथाम के लिए उन्होंने कदम उठाया है। यही मैं कहूंगा और मुझे यकीन है कि आप साहब की इससे तसल्ली और तशल्ली हो जाएगी।

SHRI INDER KUMAR GUJRAL (Bihar): Sir, permit me for a minute to compliment the Minister. He is new to his portfolio. But the spirit in which he has presented the issue, deserves our compliment and praise and I hope, he will upkeep this tradition and I wish him well. (*Interruptions*)

डा० मुरली मनोहर जोशी: उपसभाध्यक्ष जी, जो कुछ स्वास्थ्य मंत्री जी ने कहा है, मैं अपनी तरफ से और अपने सहयोगियों की तरफ से आपको पूरी मदद करने के लिए तैयार हूं और इस देश से इस प्रकार के जघन्य कृत्यों को दूर करने के लिए हम कृतसंकल्प हैं।

SHRI JAGESH DESAI (Maharashtra): Sir, the way the Minister has answered this question, has satisfied all the Mimbers. We are very much satisfied with his reply.

मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी: क्या हम मुबारकबाद भी नहीं कह सकते हैं उनकी सफाई पर। एक तो मिनिस्टर आपके यहां ऐसा निकला जिसने मिनिस्टर्स में एक इनफरादियत पैदा की।

مولانا عبید اللہ خاں اعظمی: کیا ہم مبارکباد بھی نہیں کہہ سکتے ہیں انکی صفائی پر ایک تو منسٹر آپکے یہاں ایسا نکلا جسنے منسٹرس میں ایک انفرادیت پیدا کی

श्री जगेश देसाई: जो अच्छे करने वाले है उनकी तारीफ की जानी चाहिए और इसीलिए मैं उनकी सराहना करना चाहता हूं बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने अच्छा कदम उठाया है।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Afzal, this is Half-an-Hour Discussion. So, you have to be very brief.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल: सर, मैं सबसे पहले मिनिस्टर साहब को इस बात की बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने बगैर किसी ताअम्मुल के जो मिनिस्ट्री की कोताही है, उसको मान लिया। लेकिन मिनिस्ट्री तो मुसलसल चलने वाला अमल है। आज आप मिनिस्टर हैं, कल आप नहीं रहेंगे। कल कोई साहब मिनिस्टर थे, आज नहीं रहे। लेकिन जो कोताहियां वह मुसलसल हैं। इसलिए उस पर कुछ न कुछ कार्रवाई तो होनी चाहिए। अब जैसा जोशी जी बता रहे थे कि कार्रवाई तो हुई, बंगलौर के अंदर दो डाक्टरों का रजिस्ट्रेशन खत्म किया गया। इसमें एक का नाम सैयद आदिल अहमद है और दूसरे का नाम डा० वी० रामाचन्द्रप्पा है। दो-दो साल के लिए इनका रजिस्ट्रेशन खत्म किया गया। तो बुनियादी बात यह है कि क्या इस तरह का घिनौना काम करने वालों को जो 4-4, 5-5 लाख रुपए में गुर्दे बेच रहे हैं और हैदराबाद में तो ऐसे वाकयात सामने आए हैं, बंगलौर के अंदर आए हैं कि अरब मुमालिक से लोग आए और 4-4, 5-5 लाख रुपए में सौदा करके गरीब लोगों के गुर्दे बेच दिए गए। सर, आज हम लोग क्राईम एंड पौलिटिक्स की बात भी कर रहे थे। मैं इस मौके पर एक बहुत ही अहम वाक्या बताना चाहता हूं पूरे हाऊस को। परसों हमारे राज्य सभा के एक सदस्य जो उत्तर प्रदेश के गवर्नर भी रहे और सेंटर के अंदर मिनिस्टर भी रहे, परसों उनका इंतकाल हो गया उस्मान आरिफ साहब का। मैं यह बताना चाहता हूं कि अगर आज सियासतदानों पर बहुत सारे आरोप लग रहे हैं तो एक सियासतदान ऐसा भी था कि उनके गुर्दे खराब हो गए और उनको यह कहा गया कि आप किसी से बात करके अगर गर्दा खरीद लिया जाए तो जा बच

+[ ]Transliteration in Arabic Script

सकती है। तो उन्होंने रिफ्यूज कर दिया। उन्होंने कहा कि यह हो ही नहीं सकता कि मैं किसी इंसान की जिंदगी को खतरे में डालकर अपनी जान बचाने का काम करूं। यह बात भी कही गई कि खूनी रिश्ते के तहत आप चाहें तो गुर्दा ले सकते हैं अपने बेटे का, किसी रिश्तेदार का। तो उससे भी उन्होंने इंकार कर दिया और वह तकरीबन तीन महीने तक पंत अस्पताल में पड़े रहे। उसके बाद डाक्टर्स ने कह दिया कि अब आप घर चले जाइए और इसका इलाज जो कुछ भी हो सकता है वहीं पर चलता रहेगा। परसों उनका इंतकाल हो गया। मैं देखता हूं कि आज खड़े होकर हम लोग एक दूसरे पर कीचड़ उछालते हैं और इल्ज़ामात लगाते हैं कि आपने यह कर दिया, वह कर दिया। तो वहां ऐसी मिसालें भी है और उसको भी पेश करना चाहिए देश के सामने कि एक पौलिटिशियन ने जो इस मुल्क में गवर्नर के ओहदे पर रहा और जो सेंटर का मिनिस्टर रहा, उसने इंकार कर दिया, उसने जान दे दी लेकिन किसी का गुर्दा लेना पसंद नहीं किया। ऐसी मिसाल भी आनी चाहिए और ऐसी मिसालों को लेकर अगर हम आगे चलेंगे तो हम सबकी छवि बेहतर होगी, जो आज बिगड़ती जा रही है और हम एक दूसरे से कम्पीटीशन में लगे हुए हैं उस छवि को बिगाड़ने के लिए।

जहां तक गुर्दों की सेल का सवाल है, मैं यह तवक्को करता हूं कि कानून तो मौजूद है लेकिन मसला यह है कि कानून का इतलाक़ गरीब आदमी पर नहीं होता। मैं तो यह बात जानता हूं कि इस मुल्क में जो कमजोर आदमी है उसके लिए कानून बहुत मजबूत है। और जो मजबूत आदमी है, उसके लिए कानून बहुत कमज़ोर है। वह जब चाहता है उसको अपने तरीके से इस्तेमाल कर लेता है। इसलिए जरूरत यह है कि जो लोग ऐसा करते हैं, जोशी जी का कहना सही है कि कानून में कमियां हैं लेकिन जो ऑलरेडी मौजूद हैं, उसके तहत कार्यवाही तो हो सकती थी। आखिर इतने केसेज हुए हैं, मैं समझता हूं कि बहुत बड़ी नेगिलजेंस है और हेल्थ के साथ, अपनी जिंदगी के साथ, अपने शहरियों की जिंदगी और उनकी हेल्थ के साथ एक मज़ाक है और सवाल तो सिर्फ उन लोगों का है कि जिन्होंने गुर्दे बेचे। ऐसे हज़ारों लोग हैं जो रोज़ मर रहे हैं। मेरे पास लोग न जाने कितनी सिफारिश लेकर आते हैं कि साहब वह अपने गुर्दे का ऑपरेशन कराना चाहते हैं, उनका कोई रिश्तेदार गुर्दा देने के लिए तैयार भी हैं लेकिन अस्पताल के अंदर एक लंबी लाइन है और वहां कानून नहीं होता है। आदमी मर जाता है और मैं ऐसे एक-दो केसेज जानता हूं कि जिसके अंदर गुर्दा नहीं बदला वक्त पर और उसके डेथ हो गई। तो सवाल यह है, अंतुले साहब, मैं आपसे खास तौर पर कहना चाहता हूं कि आप...**(व्यवधान)**...

†[ ]सय्यद محمد افضل عرف م - افضل:

"आंध्र प्रदेश": सर - मैं सब से पहले मिनिस्टर साहब को इस बात की बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने बगैर किसी तामल के जो मिनिस्ट्री की कोताही है उसको मान लिया - लेकिन मिनिस्ट्री तो मुसलसल चलने वाला अमल है - आज आप मिनिस्टर हैं कल आप नहीं रहेंगे - कल कोई साहब मिनिस्टर बनके आज नहीं रहे - लेकिन जो कोताहियां हैं वह मुसलसल हैं इसलिए इसपर कुछ न कुछ कार्रवाई तो होनी ही चाहिए अब जैसा जोशी जी बता रहे थे कि कार्रवाई तो हुई - बंगलौर के अंदर दो डाक्टरों का जस्टिफिकेशन कैंसल किया गया इसमें एक का नाम सय्यद عادل احمد है - दूसरे का नाम डी - راما چندر پا ہے - दो दो साल के लिए उनका जस्टिफिकेशन खत्म किया गया - तो बुनियादी बात यह है कि क्या इस तरह का घिनौना काम करने वालों को जो चार चार पांच पांच लाख रुपये में गुर्दे बेच رہے ہیں اور حیدر آباد میں تو ایسے واقعات سامنے آئے ہیں - बंगलौर के अंदर तो ऐसे हैं कि عرب ممالک سے لوگ آئے اور چار چار پانچ پانچ لاکھ روپیہ میں مسعود کر کے غریب لوگوں کے گردے بیچ دیئے گئے سر -

†[ ]Transliteration in Arabic Script

اور اسکا علاج جو کچھ بھی ہو سکتا ہے وہیں پر چلتا رہیگا - پرسوں انکا انتقال ہو گیا میں دیکھتا ہوں کہ آج گھر والے ہو کر ہم ایک دوسرے پر کیچڑ اچھالتے ہیں اور الزام لگاتے ہیں کہ آپنے یہ کر دیا وہ کر دیا - تو وہاں ایسی مثالیں بھی ہیں اور اسکو بھی پیش کرنا چاہیئے دیش کے سامنے کہ ایک پالیٹیشین نے جو اس ملک میں گورنر کے عہدے پر رہا اور جو سینئر کامنسٹر رہا اسنے انکار کر دیا اسنے جان دے دی لیکن کسی کا گردہ لینا پسند نہیں کیا - ایسی مثال بھی آنی چاہیئے اور ایسی مثالوں کو لیکر اگر ہم آگے چلیں گے تو ہم سبکی چھوی بہتر ہو گی جو آج بگڑتی جا رہی ہے اور ہم ایک دوسرے سے کمپیٹیشن میں لگے ہوئے ہیں اس چھوی کو بچانے کیلئے -

جہانتک گردوں کی سیل کا سوال ہے میں توقع کرتا ہوں کہ قانون تو موجود ہے لیکن مسئلہ یہ ہے کہ قانون کا اطلاق غریب آدمی پر نہیں ہوتا - میں تو یہ بات جاننا چاہتا ہوں کہ اس ملک میں جو امیر آدمی ہیں اسکے لئے قانون بہت مضبوط ہیں - اور جو مضبوط آدمی ہیں اسکے لئے

آج ہم لوگ "کرائم اینڈ پالیٹکس" کی بات بھی کر رہے تھے - میں اس موقع پر ایک بہت ہی اہم واقعہ بتانا چاہتا ہوں یورے صاحب کو - پرسوں ہمارے راجیہ سبھا کے ایک سابق ممبر جو اتر پردیش کے گورنر بھی رہے اور منسٹر کے اندر منسٹر بھی رہے - پرسوں انکا انتقال ہو گیا عثمان عارف صاحب کا - میں یہ بتانا چاہتا ہوں کہ آج سیاست دانوں پر بہت سارے آروپ لگ رہے ہیں تو ایک سیاست داں ایسا بھی تھا کہ جسکے گردے خراب ہو گئے اور انکو یہ کہا گیا کہ کسی سے بات کرے اگر گردہ خرید لیا جائے تو جان بچ سکتی ہے تو انھوں نے "رفیوز" کر دیا - انھوں نے کہا کہ یہ سچ ہی نہیں ہو سکتا کہ میں کسی انسان کی زندگی کو خطرے میں ڈالکر اپنی جان بچانے کا کام کروں - یہ بات بھی کہی گئی کہ خونی رشتے کے تحت اب اگر چاہیں تو گردہ لے سکتے ہیں اپنے بیٹے کا کسی رشتہ دار کا - تو اس سے بھی انھوں نے انکار کر دیا اور وہ تقریباً تین مہینے تک پنتھ اسپتال میں رہے - اسکے بعد ڈاکٹروں نے کہہ دیا کہ اب آپ گھر چلے جائیے

*] [Transliteration in Arabic Script

قانون بہت کمزور ہے - وہ جب چاہتا ہے
اسکو اپنے طریقے سے استعمال کر لیتا ہے -
اصلاح ضرورت یہ ہے کہ جو لوگ ایسا
کرتے ہیں - جو شبی جی کا کہنا صحیح ہے -
کہ قانون میں کمیاں ہیں لیکن جو آل ریڈی
موجود ہیں اسکے تحت کارروائی تو ہو
سکتی تھی - آخر اتنے کیسز ہوتے ہیں
میں سمجھتا ہوں کہ بہت بڑی نیگلیجنس
ہے اور ہیلتھ کے ساتھ - اپنی زندگی کے
ساتھ - اپنے شہریوں کی زندگی اور انکی
ہیلتھ کے ساتھ ایک مذاق ہے اور
سوال تو صرف ان لوگوں کا ہے کہ جنہوں نے
گردے بیچے - ایسے ہزاروں لوگ ہیں
جو مر رہے ہیں - میرے پاس نہ جانے کتنے
لوگ سفارش لیکر آتے ہیں کہ صاحب
وہ اپنے گردے کا آپریشن کرانا چاہتے
ہیں - انکا کوئی رشتہ دار گردے دینے
کیلئے تیار بھی ہے لیکن اسپتال کے اندر
ایک کمیٹی لائسنس ہے اور وہاں قانون نہیں
ہوتا ہے - آدمی مر جاتا ہے اور میں ایسے
ایک دو کیسز جانتا ہوں کہ جسکے اندر
گردہ نہیں بدلا وقت پر اور اسکی ڈیتھ
ہو گئی تو سوال یہ ہے آپکے صاحب -
میں آپسے خاص طور پر کہنا چاہتا ہوں
کہ آپ ... "مداخلت" ...

SHRI A.R. ANTULAY: Sir, I would like to intervene here. The hon. Member is very right, and we have reconstituted the Authorisation Committees. So far, the Authorisation Committee was under the Director-General of Health Services. Now what we have done is we have also taken public workers, social workers from the area of the hospital concerned which is authorised for transplantation, as also the officers, so that there should be no time-lag between the time when a kidney transplant or any other organ transplant is to take place and the time when the authorisation comes. All that we have taken care of, and the Committees are not only in the process of being constituted but, maybe, by today evening or by tomorrow they will also be announced.

श्री मोहम्मद अफ़ज़ल उर्फ मीम अफ़ज़ल: सर, मैं अपनी बात इस बात से खत्म करना चाहता हूं, इस बुनियादी सवाल पर मैं.....आपने बड़ी अहम बातें कही हैं, इसलिए उम्मीद ज़रा सी पैदा हुई है। हमारे यहां यह देखना पड़ेगा आपको कि हज़ारों लोग सिर्फ इसलिए मर जाते हैं कि गुर्दे की बीमारी उनको हो जाती है और गुरबत की वजह से मर जाते हैं क्योंकि वे इलाज नहीं करा सकते, प्राइवेट नर्सिंग होम्स में नहीं जा सकते। मैं यह जानना चाहता हूं कि कभी हमने इस बात पर गौर किया कि इस मुल्क में हेल्थ के लिए बजट कितना है? ऐजुकेशन के लिए बजट कितना है? हम लोग डिफेंस के नाम पर अपने मुल्क का 28 परसेंट बजट खर्च करते हैं और हेल्थ के लिए एक या दो या तीन परसेंट बजट हमारे पास है। ...(**व्यवधान**)... मुझे नहीं मालूम लेकिन ऐजुकेशन के लिए 3.6 परसेंट है। ...(**व्यवधान**)...

آخری محمد افضل عرف م - افضل :
سر - میں اپنی بات اس بات سے ختم کرنا
چاہتا ہوں - اس بنیادی سوال پر میں
... آپنے بڑی اہم باتیں کہی ہیں
اس لئے امید ذرا سی پیدا ہوئی ہے -

*] [Transliteration in Arabic Script

ہمارے یہاں یہ دیکھنا پڑے گا آپکو کہ
صرف اسلئے لوگ مر جاتے
ہیں کہ گردے کی بیماری انکو ہو جاتی
ہے اور غریبی کی وجہ سے مر جاتے ہیں
کیونکہ وہ لوگ علاج نہیں کرا سکتے -
پرائیویٹ نرسنگ ہوم میں نہیں جا سکتے
میں یہ جاننا چاہتا ہوں کہ کبھی ہم نے
اس بات پر غور کیا کہ اس ملک میں ہیلتھ
کیلئے بجٹ کتنا ہے ایجوکیشن کیلئے بجٹ
کتنا ہے - ہم لوگ ڈیفینس کے نام پر اپنے
ملک کا ۲۸ پرسینٹ بجٹ خرچ کرتے ہیں
اور ہیلتھ کیلئے ایک یا دو یا تین
پرسینٹ بجٹ ہمارے پاس ہے ...
... "مداخلت" ... مجھے نہیں معلوم -
لیکن ایجوکیشن کیلئے ۳ آشاریہ ۹
پرسینٹ ہے ... "مداخلت" ...

SHRI R.L. BHATIA: For education it is 3.5 per cent. ...(*Interruptions*)...

SHRI JAGESH DESAI: The Defence Minister has knocked off, the Prime Minister has knocked off....(*Interruptions*).... We had 28 per cent Defence budget....(*Interruptions*)....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): That is right. ...(*Interruptions*)...

SHRI K.R. MALKANI (Delhi): Sir, that has occurred in the Defence budget. ...(*Interruptions*)... Mr. Afzal, you should have verified the figures before quoting them. ....(*Interruptions*)...

SHRI MOHAMMED AFZAL *alias* MEEM AFZAL: I am not saying that...(*Interruptions*)...

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: That is not the point here.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल: बड़ी अनपार्लमेंटरी बात है कि मैं कुछ कह रहा हूं और उसको आप हमेशा दूसरी तरफ घुमा देते हैं। मलकानी साहब, आप बहुत सीनियर आदमी हैं। ...(**व्यवधान**)...

اشری محمد افضل عرف م - افضل :
بڑی "انفارمیٹو" بات ہے کہ میں کچھ
کہہ رہا ہوں، اور اسکو آپ ہمیشہ دوسری
طرف گھما دیتے ہیں - ملکانی صاحب آپ
بہت سینیر آدمی ہیں ... "مداخلت" ...

श्री के० आर० मलकानी: आप जो बोलते हैं, जो कहते हैं, उसे...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Afzal, before quoting certain figures you should have verified them.

SHRI MOHAMMED AFZAL *alias* MEEM AFZAL: Sir, if I have said anything wrong, I withdraw that.

मैंने उस नीयत से बिलकुल नहीं कहा। मेरे कहने का मतलब यह है कि बजट जो हमारा हेल्थ का है और ऐजुकेशन का है, इसको जरूरत बढ़ाने की जरूरत है इसलिए कि लोगों को ये दो चीजें बुनियादी जो हैं, इस पर सुविधा ज्यादा नहीं मिल रही है। लोग बीमार हैं, इलाज के लिए पैसा नहीं होता, हमारे यहां अस्पतालों के अंदर दवाइयां नहीं होती। इसलिए उसको भी बढ़ाने की जरूरत है। अगर वह बढ़ाएंगे तो यकीनन थोड़ी बहुत रिलीफ हो सकती है।

[] [Transliteration in Arabic Script

†[ ]شری محمد افضل عرف م۔ افضل:
میں نے اس نیت سے بالکل نہیں کہا۔ میرے
کہنے کا مطلب یہ ہے کہ بجٹ جو ہمارا
ھیلتھ کا ہے اور ایجوکیشن کا ہے اسکو
بڑھانے کی ضرورت ہے۔ اسلئے کہ لوگوں
کو یہ دو چیزیں بنیادی جو ہیں اس
پر سو پرسنٹ زیادہ نہیں مل رہی ہے۔
لوگ بیمار ہیں علاج کیلئے پیسہ نہیں
ہوتا۔ ہمارے یہاں اسپتالوں کے اندر
دوائیاں نہیں ہوتیں اسلئے اسکو بھی
بڑھانے کی ضرورت ہے۔ اگر دو بڑھائینگے
تو یقیناً تھوڑی بہت ریلیف ہو سکتی
ہے۔ "ختم شد"

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Maulana Obaidullah Khan Azmi. Kindly be brief.

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी: मैं इस मसले पर यह कहना चाहूंगा...**(व्यवधान)**... बधाई देने के लिए आप लोग जो हर जगह ये, चेयर तो मैं समझता हूं कि चेयर सिर्फ एक यही नहीं है बल्कि कई जगह चेयर हैं और कई जगह से ऑर्डर और आदेश मिलते हैं। मुझे तो बड़ा अफसोस है और मैं यही कहना चाहूंगा कि

"खुद तो दवा न कर सके, मशवरए दुआ दिया,
चारागरों ने और भी दर्द का दिल बढ़ा दिया।"

मैं तो खुद सिर्फ इतने जुमले के लिए बड़ा हुआ था चेयरमैन साहब कि हमारे मोहतरीम वजीरे सेहत ने जिन सेहतमंद खयालात का इज़हार किया है, मरीज़ाने वक्त की तशफ्फी के लिए शफा का मरहम साबित होगा। आप लोग बगैर समझे हुए भी इस जुबान की शीरीनी से फायदा उठा रहे हैं, यह क्या कम शफायाबी है? ...**(व्यवधान)**...

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: एक कहे और दूसरा समझे।

मोलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी: कमाल की बात यही है कि बगैर समझे हुए उस बात का मज़ा पा ले लिया जाए और उसके माफी जमीर से भी मुतमइन हो जाया जाए। मैं यह भी अर्ज करना चाहता हूं कि जेब तराशों की बात तो सुनी थी कि बड़ी खूबसूरती से वह जेब तराश लेते थे मगर गुर्दा तराश इस तरह से गुर्दे को तराशते हैं कि अगर हमारी हुकुमत ने और हमारे आवाम ने अखलाकी और कानूनी जिम्मेदारियों का निबाह नहीं किया तो कहीं इनका भी गुर्दा न तराश लिया जाए और उन्हें खबर न हो सके, पता तक न चल सके। डा० मुरली मनोहर जोशी साहब को मैं इसलिए मुबारकबाद दूंगा कि उन्होंने छानबीन के जरिए इस मसले को हाऊस में रखकर पूरे मुल्क के गरीब आवाम के तहफ्फुज़ का एक कानूनी रास्ता निकालने की कोशिश की और हम अपने वज़ीर सेहत इज़तमआब अब्दुल रहमान साहब को मुबारकबाद इस बात की देते हैं कि बगैर कमोवेश किए हुए उन्होंने अपनी इस ख्वाहिश का इजहार किया कि हम मुल्क में पैदा होने वाली अखलाकी गिरावट के खात्मे के लिए और अपनी मिनिस्टरी में अगर अखलाकी और कानूनी गिरावट हुई है तो उसके सुधार के लिए बाहमी तोर पर बैठकर इस मुल्क को एक इज्जतबक्श सेहत देना चाहते हैं ताकि हिन्दुस्तान भी सेहतमंद रहे और हिन्दुस्तानी भी। 50 लाख आदमी बंगलादेश में गुर्दे के मरीज हैं। बंगलादेश में शहर ढाका में 2 हॉस्पिटल हैं जहां फीस बहुत ज्यादा है। लोग कलकत्ता बहुत आसानी से आ जाते है। गुर्दों का तबादला यहां होता है और गुर्दों के तबादले के बाद वह सेहतमंद होकर चले जाते हैं। एक गैर सेहतमंद आदमी हिन्दुस्तान आकर सेहत की सनद और सेहत का जिस्म लेकर जाए और एक हिन्दुस्तानी जो सेहतमंद था, उसकी सेहत उससे छीनकर फॉरेन को सप्लाई कर दी जाए, विदेश को सप्लाई कर दी जाए, यह कितनी शर्म की बात है। इस शर्मनाक तौर-तरीके को बदलने के लिए बहुत जरूरी है कि उस कमेटी का गठन हो, जिसके गठन के लिए हमारे वजीरे मोसूफ ने फरमाया है और मुल्क के लोगों को गुर्दे की तबाही से निजात मिले। बहुत-बहुत शुक्रिया। धन्यवाद।

†[ ]Transliteration in Arabic Script

میں یہ بھی عرض کرنا چاہتا ہوں کہ جیسے تراشوں کی بات تو سمجھ میں آتی ہے کہ بڑی خوبصورتی سے وہ جیسے تراش لیتے ہیں۔ مگر گردے تراش اسطرح سے گردے کو تراشتے ہیں کہ اگر ہماری حکومت نے اور ہمارے عوام نے اخلاق اور قانونی ذمہ داریوں کا مظاہرہ نہیں کیا تو ہمیں پتا بھی نہ گردہ نہ تراش لیا جائے اور ہمیں خبر نہ ہو سکے۔ پتہ تک نہ چل سکے۔ ڈاکٹر عمری منور جوشی صاحب کو میں اسلئے مبارکباد دونگا کہ انھوں نے چلن بین کے ذریعہ اس مسئلہ کو ہاؤس میں رکھکر پورے ملک کے غریب عوام کے تحفظ کا ایک قانونی راستہ نکالنے کی کوشش کی اور ہم اپنے وزیر صحت عزت مآب عبدالرحمٰن صاحب کو مبارکباد اس بات کی دیتے ہیں کہ بیخرم و بیش کئے ہوئے انھوں نے اپنی اس خواہش کا اظہار کیا کہ ہم ملک میں پھیلا ہوئے غیر اخلاقی گراوٹ کے خاتمے کیلئے اور اپنی منشری میں اگر اخلاق اور قانونی گراوٹ ہوئی ہے تو اسکے سدھار کیلئے باہمی طور پر بیٹھکر اس ملک کو ایک عزت بخشش صحت دینا چاہتے ہیں تاکہ ھندوستان بھی صحت مند رہے اور ھندوستانی بھی۔

†مولانا عبیداللہ خاں اعظمی (اتر پردیش): میں اس مسئلہ پر یہ کہنا چاہونگا۔ . . "مداخلت" . . . بدھائی دینے کیلئے جو آپ لوگ ہر جگہ سے۔ چیئر تو میں سمجھتا ہوں کہ چیئر صرف ایک یہی نہیں ہے بلکہ کئی جگہ چیئر ہے اور کئی جگہ سے آرڈر اور آرڈیننس نہیں ملتے ہیں۔ مجھے تو افسوس ہے اور میں یہی کہنا چاہونگا کہ:

خود تو دوا نہ کر سکے مشورہ دعا دیا
چارہ گروں نے اور بھی درد دل کا بڑھا دیا۔

میں تو صرف اتنے جملے کیلئے محکوم ہوا تھا۔ چیئر میں صاحب کہ ہمارے محترم وزیر صحت نے جن صحتمند خیالات کا اظہار کیا ہے مریضان وقت کی تشفی کیلئے شفا کا مرھم ثابت ہوگا۔

آپ لوگ بغیر سمجھے ہوئے بھی اس زبان کی شیرینی سے فائدہ اٹھا رہے ہیں یہ کیا کم شفا یابی ہے۔ . . "مداخلت"۔ . . شری وشنو کانت شاستری: ایک کہے اور دوسرا سمجھے۔

مولانا عبیداللہ خاں اعظمی: کمال کی بات یہی ہے کہ بغیر سمجھے ہوئے اس بات کا مزہ بھی لے لیا جائے اور اسکے مافی الضمیر سے بھی مطمئن ہو جایا جائے

†| |Transliteration in Arabic Script

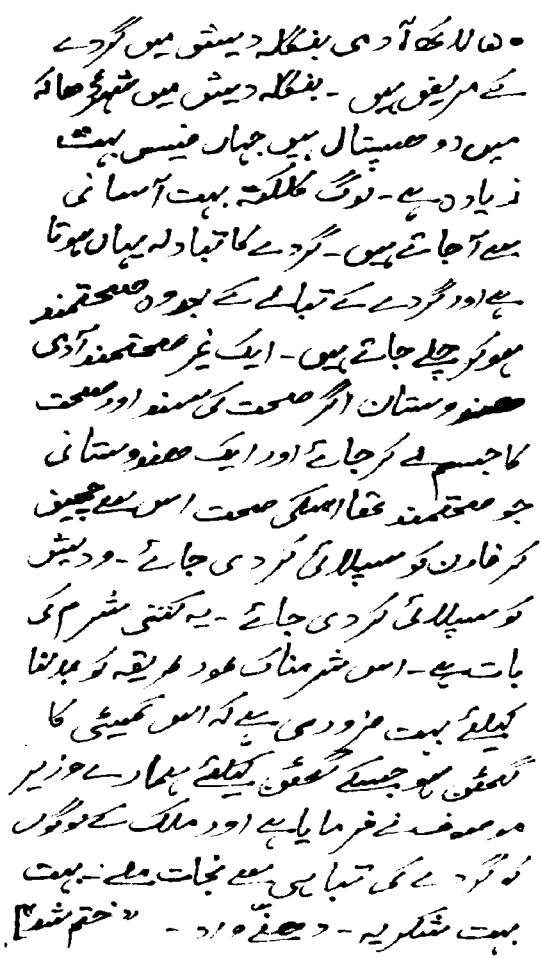

श्रीमती सरला माहेश्वरी (पश्चिम बंगाल): आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, माननीय जोशी जी ने अल्पकालिक चर्चा के जरिए जिस महत्वपूर्ण मुद्दे को उठाया और चिंता जाहिर की, मैं खुद भी उनकी चिन्ता में साझीदार बनना चाहती हूं और पूरा सदन शायद साझीदार बनना चाहे। उपसभाध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी ने जो जवाब दिया, उनकी सब इच्छाओं के बावजूद गरीबी थी, गरीबी है और गरीबी रहेगी की सब इच्छाओं का सम्मान करने की हालत में कम से कम मैं तो नहीं हूं। आजादी के 48 वर्ष बाद अगर हम अपने हिन्दुस्तान के नागरिक को यह कहना चाहें कि

"भूख है तो सब्र कर, रोटी नहीं तो क्या हुआ।
आजकल दिल्ली में है, जेरे बहस यह मुद्दा।।"

हम सिर्फ बहस करते जाएंगे कि हम भूख कैसे मिटाएं लेकिन अफसोस है कि जो गुरबत की जिन्दगी जी रहे हैं, जो गरीबी की जिन्दगी जी रहे हैं मैं उनसे कहना चाहूंगी कि

"खूबसूरत सफीलों में बंदी मेरे दोस्त,
तुम न आते मेरे गांव पर,
एक जिन्दगी यह भी तो देख जाते।"

मंत्री जी और हमारी सरकार से मैं कहना चाहूंगी कि क्या उन्होंने कभी कल्पना की है कि एक जिन्दा आदमी, एक जिन्दा मजदूर जो करघा चलाता हुआ टी० बी० का मरीज हो जाता है और खांसता है तो थूक नहीं निकालता, खून थूकता है और वह मजदूर किस तरह जीते-जी अपने शरीर को समर्पित कर जाता है कि मुझे काटकर मेरा कंकाल तीसरी दुनिया के देश विकसित देशों को भेज देना, अमरीका में भेज देना। जिस तरह तीसरी दुनिया के हमारे जैसे देश, भारत जैसे देश जो साम्राज्यवादी देशों के परीक्षण नमूने के तौर पर मानवीय अंगों की तिजारत किए जा रहे हैं, उपसभाध्यक्ष महोदय, यह बहुत ही शर्मनाक बात है। आज हमारे देश में मानवीय अंगों का व्यापार बहुत ही संगठित रूप से किया जा रहा है। इसलिए मैं मंत्री जी से यह कहना चाहूंगी कि जो अमानवीय पेशा, जो अमानवीय धंधा इतने संगठित रूप से चल रहा है, क्या उसकी जड़ों को आपने कुरेदने की कोशिश की है कि उनकी जड़े कितनी गहरी हैं, कौन वे लोग हैं जो इस धंधे में लिप्त हैं? उपसभाध्यक्ष महोदय, मुझे याद आते हैं कार्ल मार्क्स के वे शब्द जो उन्होंने कहे थे कि इस पूंजीवादी समाज में, यह पूंजी, यह मुद्रा तमाम पवित्र समझे जाने वाले पेशों को अमानवीय बना देती है, इन तमाम पवित्र समझे जाने वाले पेशों को चाहे वह डाक्टर हो, चाहे अध्यापक हों उन्हें सिर्फ नकद कौड़ी के मूल्यों में बदल देती है और वहां मानवीय संबंधों का कोई अर्थ नहीं रह जाता। मुझे अफसोस है कि आजादी के 48 वर्षों के बाद हमने हिन्दुस्तान में जो समाज बनाया है उसमें गरीब और अमीर के बीच ना-पाटी जाने वाली खाइयां बन गई हैं और इस मर्ज का कोई समाधान नजर नहीं आता, इस मर्ज का इलाज नजर नहीं आता। इसलिए उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहती हूं कि आपकी सरकार की जो नीतियां हैं, जो मूलभूत आपकी सरकार की नीतियां हैं उन नीतियों के चलते क्या आप इस बीमारी का इलाज कर पायेंगे? वे नीतियां जो आज

[*] [Transliteration in Arabic Script]

उपभोक्तावाद पर टिकी हुई है, वह उपभोक्तावाद जो आज मनुष्य को पशु में बदल रहा है, वह उपभोक्तावाद जो आज हिन्दुस्तान के 18 करोड़ लोगों को अपनी नीतियों पर चला रहा है, उस नीति के चलते क्या आप समाज को बदल पायेंगे?

THE VIC-CHAIRMAN (SHRI V. NARYANASAMY): Kindly conclude.

श्रीमती सरला माहेश्वरी: इसलिए उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं मंत्री जी से यह कहना चाहूंगी कि जब तक आप इसकी जड़ों पर प्रहार नहीं करेंगे, जब तक आप अपनी मूलभूत नीतियों को नहीं बदलेंगे—18 करोड़ हिन्दुस्तान के लोग हिन्दुस्तान नहीं हैं, जब तक आप हिन्दुस्तान की बहुसंख्यक जनता की हित में अपनी नीतियां बदलेंगे नहीं, शोषण के इस मार्ग को बदलेंगे नहीं तब तक इस समस्या का कोई समाधान नहीं हो सकता। आप कानून बनाइए, कुछ भी करिए लेकिन यह अमानवीय शोषण चलता रहेगा। हिन्दुस्तान में केवल गुर्दों का व्यापार नहीं हो रहा है। यहां मनुष्य के हर अंग का व्यापार हो रहा है। यहां पर भ्रूणों का व्यापार हो रहा है, मानव कंकाल का व्यापार हो रहा है। यहां तक मां-बहनें, जयन्ती जी ने यहां यह मामला उठाया था कि किस ब्रिटेन में हमारी महिलाओं को नाभिकीय रोटियां खिलाकर उन पर परीक्षण करना चाहते थे। यह देश के लिए बड़ी शर्म की बात है। इसलिए, उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं सरकार से यह निवेदन करना चाहूंगी कि यह जो अमानवीय जुल्म या अमानवीय शोषण देश में बरकरार है, इस अमानवीय जुल्म और शोषण को मिटाने के लिए और मनुष्य को मनुष्य की गरिमा देने के लिए सरकार को रुपये का राज बदलना पड़ेगा, तभी आप कह सकेंगे कि वास्तव में आपने एक ऐसा समाज बनाया है, एक ऐसी तहजीब बनाई है जिसमें रुपया राज न करे, जिसमें आदमी राज करे, मानव राज करे और जिसमें मानव की मूल्यता, मानव की गरिमा बनी रहे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपना वक्तव्य समाप्त करती हूं और आशा करती हूं कि मंत्री जी अपनी नीतियों को बदलने की चेष्टा करेंगे।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं सिर्फ यह पूछना चाहता हूं, मुझे जातीतौर पर जानकारी नहीं है कि आई बैंक या ब्लड बैंक की तरह क्या मेडिकली यह संभव है कि यह जो गुर्दे हैं, इनका बैंक बने? अगर है, अगर मेडिकली यह बनाना संभव है तो यह बनाया जाना चाहिए जिससे गरीब आदमी भी उसका फायदा उठा सकें।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Minister, you reply now.

THE MINISTER OF HELATH AND FAMILY WELFARE (SHRI A.R. ANTULAY): I have already replied, I believe.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): No. You have to reply to the points raised by three or four Members now. You reply to those points.

SHRI A. R. ANTULAY: Mr. Vice-Chairman, most of the points that have been raised were covered in my main reply. So far as Mathurji's point is concerned, it is a matter of satisfaction for us to say that we have already decided to have an organ bank– a kidney bank. Very shortly, an announcement to that effect will be made, like the authorisation committee, as I said.

6 P.M.

So far as other points are concerned, I mean, some of them travel beyond my base in the sense that under the Rules of Business some of them go to the economic Ministry which is the Ministry of Finance, some of them go to the Social Welfare Ministry which is headed by Kesariji. So, I think...

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA: Ministry of External Affairs also.

SHRI A. R. ANTULAY: Also External Affairs. Thank you very much. So far as my Ministry is concerned, Sir, you will appreciate that without any reservations, mental or otherwise, I have come out clean as is my habit and my nature and I am glad that it has been appreciated that a Committee will be constituted. As I have promised here, the promise is solemn, and I will discuss with Dr. Murli Manohar Joshiji and we shall have the Committee of all the parties because this is a human approach and human problem. It is neither a party problem nor even a political problem. Therefore, in a democracy, I think, it will

be better if we believe in give-and-take. I don't think I can do anything more or better than what I have admitted to in my own humble, small way. I am sure that the House will be satisfied. I am really expressing my deep sense of gratitude for the appreciation which was given by almost all the Members including Dr. Murli Manohar Joshiji, Gujralji, Maulana Obaidullahji, Afzal Bhai and others. I thank them through you, Sir. I am sure that the House will co-operate fully in the discharge of any duties for which I have already resolved.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Minister, Shri Salim would like to have a clarification on one point. Kindly reply to that. ...*(Interruptions)*...

SHRI MD. SALIM (West Bengal): I am not objecting to that. I am only supplementing him. We know requirements are there. My point is that you should make it available where it is required. Recently, we have come across a case where an Air Force school principal's husband had died and immediately the wife took the courage to inform all those people so that different parts of his body could used for other patients who actually needed them. So, my point is whether you will take care of those persons who want to donate their organs. The second thing is that this should be speedy. You promise to the Committee, because you passed the Human Transplantation Act, but the notification was not there and it was not being implemented. So, it should be speedy. I am not asking for any time-frame. The monitoring committee should also be there as early as possible.

SHRI A.R. ANTULAY: Thanks for supplementing. But, I think, it will be better if the hon. Member also uses his good offices with the States which ave not yet enacted such a law and also enforce it. So far as other deficiencies are concerned, I shall welcome the suggestions and certainly they will be considered with due respect and also with utmost thought. That is what he wanted of me and I believe together we can certainly do a lot. But, I will repeat that those States which, unfortunately, have not yet found favour with this Act or the Act has not found favour with those Governments, they will, at least, be a little alert in doing it so that there is uniformity throughout the country because of the integrity of the nation. Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): The matter is over. Now, we shall take clarifications on the statement of the Minister of State for Home Affairs, Shri Rajesh Pilot. Mr. Rajesh Pilot, have you circulated copies of the statement to the Members? ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: It was laid on the Table of the House yesterday.

[The Vice-Chairman (Shri Md. Salim) *in the Chair]*

CLARIFICATIONS ON STATEMENT BY MINISTER

Re: Escape of LTTE Cadres from the Vellore Special Camp,North Arcot, Ambedkar District, Tamil Nadu

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu): Sir, I read the statement of the Minister which he has laid on the Table of the House yesterday. This is merely a repetion because the Minister cannot do anything else. He is giving us such information as the State Government has provided to him. Sir, the facts of the matter are that from the time these militants have been detained in our State, 16 times the militants have escaped. Sixty-nine persons have escaped apart from the 43 persons who supposedly escaped on the 14th. Out of the 69 who had escaped earlier less than 30 have been arrested and from the prisons where the militants have been detained, more than 30 have escaped since May 1992. It is a fact that,